भूमि गायत्री मन्त्र

गुरुदेव सिद्धपीठ की संगीत मण्डली द्वारा गाया गया।

© Ⓟ २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।
कृपया इसे कॉपी न करें, रिकॉर्ड या वितरित न करें।

भूमि गायत्री मन्त्र

ॐ धनुर्धरायै विद्महे
सर्वसिद्ध्यै च धीमहि।
तन्नो धरा प्रचोदयात्॥

ॐ। हम धनुष-धारिणी को जानें।
हम उनका ध्यान करें जो समस्त कार्यों को सिद्ध करती हैं।
धरा, जो सबको धारण करती हैं, हमारे पथ को आलोकित करें और हमें आत्मज्ञान प्रदान करें।

भूमि गायत्री मन्त्र

सबको धारण करने वाली, भूमि देवी को समर्पित

मयूरी स्ट्रैटनर द्वारा लिखित परिचय

भूमि गायत्री मन्त्र, भूमि देवी से की गई प्रार्थना है। किसी भी गायत्री मन्त्र में शब्दों का विशिष्ट क्रम वह सूत्र है जिसका सदियों से पालन होता आया है और जिसके माध्यम से साधक ध्यान के लिए स्वयं को तैयार करता है, इष्टदेवता की दिव्य उपस्थिति का आवाहन करता है व उनकी उपासना करता है। अभ्यास व अध्ययन से इस मन्त्र की शक्ति उजागर होती है।

गायत्री मन्त्र, 'ऐसे पावन वर्ण होते हैं जिनमें उनका जप करने वाले का शुद्धिकरण करने, रक्षण करने व रूपान्तरण करने की शक्ति होती है'[१]। ये मन्त्र प्रार्थनाएँ भी हैं। बल्कि, कई मन्त्रों को प्रार्थना का, भगवान से वार्तालाप करने का साधन माना जा सकता है। सिद्धयोग पथ पर मन्त्र-जप के अभ्यास के विषय में शक्तिपूर्ण बात यह है कि हम जिन भगवान से प्रार्थना कर रहे होते हैं, उन्हें हम अपने मूल-सत्त्व यानी अपनी आत्मा के रूप में पहचानने के लिए प्रयासरत रहते हैं। गुरुकृपा से अनुप्राणित मन्त्र की सामर्थ्य उसके वर्णों में सन्निहित होती है और संकल्प के साथ इन वर्णों का उच्चारण करने से इस शक्ति को प्रकट किया जा सकता है। जब आप गायत्री छन्द की पारम्परिक लय में गायत्री मन्त्र गाते हैं, तब इसकी ध्वनितरंगें आपके भौतिक शरीर में व आपके आस-पास के वातावरण में गतिशील होकर स्पन्दित होती हैं जिससे उस मन्त्र के इष्टदेवता की शक्ति का आवाहन होता है।

विश्वभर की संस्कृतियों में, भू-देवियों को पूजनीय माना गया है और उर्वरता, कृषि व प्रचुरता के साथ निकटता से जोड़ा गया है। मानवजाति के प्राचीनतम शास्त्र, वेदों में, भूमि देवी के मूल स्वरूप का वर्णन पंचमहाभूतों में से एक के रूप में किया गया है जो कि समस्त भौतिक सृष्टि के आधारभूत तत्त्व हैं। इनके बाद रचित, पुराणों में साक्षात् भूमि देवी का वर्णन किया गया है और इनमें कई ऐसी पौराणिक कथाएँ हैं जिनमें भूमि देवी को समस्त जीवन का आधार मानकर उनकी उपासना की गई है।[२]

सिद्धयोग पथ पर, हम समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त दिव्य शक्ति का सम्मान कर, धरती माँ को उनकी कृपापूरित प्रचुरता व उदारता के लिए सदा ही धन्यवाद देते हैं। एक साधक होने के नाते हम कुछ तरीक़ों द्वारा धरती माँ को धन्यवाद दे सकते हैं, जैसे, अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण का सम्मान करना; अपने दैनिक जीवन में ऐसे कार्य-व्यवहारों को शामिल करना जिनसे प्रकृति, पौधों व भूमि की देखभाल हो; धरती माँ का संरक्षण करने का निश्चय करना एवं सभी प्राणियों की रक्षा व शान्ति के लिए प्रार्थनाएँ अर्पित करना। जब हम भूमि गायत्री मन्त्र का पाठ करते हैं तब हम भूमि देवी का आवाहन कर रहे होते हैं, और इस प्रकार हम अपनी प्रेमल प्रार्थनाएँ सीधे पराशक्ति को ही अर्पित कर पाते हैं। इस प्रकार, हम अपने ग्रह के साथ और इस पर वास करने वाले सभी जीवों के साथ एक जुड़ाव का अनुभव कर सकते हैं।

यद्यपि इस गायत्री मन्त्र में विशेष रूप से भूमि देवी के नाम का उल्लेख नहीं किया गया है, तथापि जो छवि इससे उभरकर आती है उससे पता चलता है कि इस मन्त्र द्वारा वस्तुतः धरती माँ की ही आराधना की जा रही है। उदाहरणार्थ, पहली पंक्ति में हम प्रार्थना करते हैं कि हम उन्हें जानें 'जो धनुष [धनु] धारण करती [धरायै] हैं।' पारम्परिक भारतीय प्रतीकात्मक छवि-निरूपण के अनुसार

धनुष, सामर्थ्यशक्ति का प्रतीक है—यहाँ तात्पर्य है, समस्त सृष्टि की आधारभूत शक्ति, दिव्य चिति की विशुद्ध रचनात्मक शक्ति से। धनुष उन भूमि देवी को दर्शाता है, जिनकी सामर्थ्यशक्ति है, जीवनदायिनी शक्ति।

संस्कृत के बारे में जो बात मुझे सबसे रोचक लगती है, वह यह कि सभी शब्द—क्रियाएँ, संज्ञाएँ और विशेषण—एक धातु शब्द से बनते हैं। अकसर एक धातु शब्द के कई अर्थ होते हैं और इससे एक ही शब्द का अर्थ अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में बदल जाता है। इस प्रकार संस्कृत में एक आनन्दमय गतिशीलता है। 'धनु' [धनुष] का धातु शब्द है 'धन्' जो 'ध्वनि उत्पन्न करना' व 'तीव्र गति से चलाना'[३], दोनों को दर्शाता है। यह इस गायत्री मन्त्र के अर्थ को एक और आयाम प्रदान करते हुए बताता है कि भूमि देवी मन्त्रस्वरूपा हैं अर्थात् वे वही चैतन्य स्पन्द हैं जो ब्रह्माण्ड का सृजन व उसका पोषण करता है। अतः यह पंक्ति इस प्रार्थना का आवाहन करती है : "हम अपने अन्दर उस पराशक्ति को पहचानें जो इस ब्रह्माण्ड की सामर्थ्यशक्ति के स्रोत के रूप में स्पन्दायमान है।"

इस गायत्री मन्त्र की अन्तिम पंक्ति में, 'धरा' शब्द को दोहराया गया है। धरा का अर्थ है, 'सम्बल प्रदान करने वाली', 'धारण करने वाली' और 'वहन करने वाली'। यह बात पुनः इसकी स्पष्ट सूचक है कि भूमि देवी ही इस मन्त्र का केन्द्रण हैं क्योंकि धरती माँ सबको धारण करती हैं और वे इस संसार में समस्त जीवन की स्रोत व पोषणकारिणी हैं। हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि उनकी कृपा हमारे पथ को आलोकित करे और हमें सत्य का ज्ञान प्रदान करे।

इस ऑडिओ रिकॉर्डिंग में भूमि गायत्री मन्त्र को भारत स्थित सिद्धयोग आश्रम, गुरुदेव सिद्धपीठ की संगीत मण्डली ने गाया है। सुनते समय, इसके संगीत व छन्द से परिचित हो जाएँ और मन्त्र की सुमधुर ध्वनियों को अपनी सत्ता में समाहित होने दें। इस पर मनन करें कि यह संगीत-शैली भारत में सदियों से एक सजीव व शक्तिपूरित अभ्यास रही है। इस प्राचीन अभ्यास की शक्ति से अपने आपको ध्यान में उतरने दें।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर दी गई Glossary of Siddha Yoga Terminology, 'मन्त्र' ९ अप्रैल, २०२१ को सन्दर्भ लिया गया https://www.siddhayoga.org/glossary।

[२] New World Encyclopedia, s.v. "Bhudevi," ९ अप्रैल, २०२१ को सन्दर्भ लिया गया, https://www.newworldencyclopedia.org/entry/Bhudevi।

[३] Monier-Williams Sanskrit-English Dictionary, s.v. "dhan", ९ अप्रैल, २०२१ को सन्दर्भ लिया गया, https://www.sanskrit-lexicon.uni-koeln.de/scans/MWScan/2020/web/webtc/indexcaller.php।